वैज्ञानिकों का महाकुंभ - भारतीय विज्ञान कांग्रेस

नवनीत कुमार गुप्ता

अक्सर हमारे देश को उत्सव प्रधान देश कहा जाता है। लेकिन यह अच्छी बात है कि ये उत्सव जीवन और कला के हर क्षेत्र के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र को भी जगमग कर रहे हैं। भारतीय विज्ञान कांग्रेस विज्ञान जगत का ऐसा ही अनोखा उत्सव है जिसमें देश भर के वैज्ञानिक शामिल होते हैं। असल में इसका इतिहास आज से एक सदी पुराना है।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ द्वारा आयोजित किए जाने वाले वैज्ञानिकों के इस महाकुंभ का पहली बार आयोजन सन 1914 में कोलकाता में किया गया था। तब इसके पहले अध्यक्ष प्रख्यात वैज्ञानिक आशुतोष मुखर्जी थे। तब से लेकर आज तक यह आयोजन देश में आधुनिक विज्ञान को आगे बढ़ाने एवं समाज के विकास के लिए इसके उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अग्रसर है।

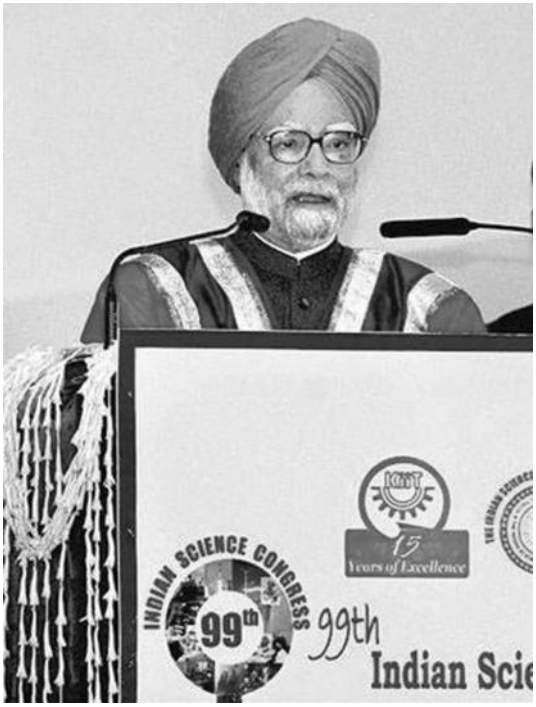

असल में विज्ञान के विकास में इस तरह के आयोजनों की भूमिका को देखते हुए ही भारतीय विज्ञान कांग्रेस के शताब्दी समारोह-2013 की अध्यक्षता माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह कर रहे हैं। डॉ. मनमोहन सिंह पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ का अध्यक्ष चुना गया है। 3 से 7 जनवरी, 2013 के दौरान आयोजित होने वाले इस विज्ञान कांग्रेस की केन्द्रीय विषयवस्तु 'भारत के भविष्य को गढ़ने में विज्ञान की भूमिका' है।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस छात्रों, वैज्ञानिकों एवं विज्ञानकर्मियों के बीच संवाद स्थापित करने हेतु अखिल भारतीय स्तर पर एक मंच प्रदान करता है। यहां वैज्ञानिकों को एक दूसरे से संवाद स्थापित करने और एक दूसरे के कामों से परिचित होने का अवसर मिलता है। इससे देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के लिए अनुकूल माहौल निर्मित होता है। इसके अलावा विज्ञान से सम्बंधित मुद्दों जैसे जिनेटिक रूप से परिवर्तित फसलें, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापमान वृद्धि आदि पर सघन बहस के लिए विज्ञान कांग्रेस एक महत्त्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। यह एक ऐसा मंच है जहां प्रख्यात वैज्ञानिक, स्कूल और कॉलेज के शिक्षक और आम लोग सभी एक जगह एकत्र होते हैं।

विज्ञान कांग्रेस का एक और आकर्षण विदेशों से नोबेल विजेता वैज्ञानिकों का शामिल होना है। इस दौरान यहां लगाई जाने वाली वैज्ञानिक प्रदर्शनियां आम लोगों का ध्यान खींचती है। भारतीय विज्ञान कांग्रेस ने जनमानस में विज्ञान शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान के महत्त्व को स्थापित करने में भी मदद की है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत के प्रधानमंत्रियों ने विज्ञान कांग्रेस के मंच से सरकार की वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी नीतियों की घोषणा की है।

प्रथम विज्ञान कांग्रेस से आज तक भारतीय विज्ञान कांग्रेस 34 स्थानों पर आयोजित हुई है। इन स्थानों में अविभाजित भारत का लाहौर भी शामिल है। कई स्थानों पर

एक से अधिक बार विज्ञान कांग्रेस का आयोजन हुआ है। अब तक करीब 14 अंग्रेज़ वैज्ञानिक इसके अध्यक्ष रह चुके हैं। हालांकि अभी तक केवल चार महिला वैज्ञानिकों को ही इसकी अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। इसीलिए 2012 का मुख्य विषय 'समावेशी नवाचार हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी - महिलाओं की भूमिका' पर केन्द्रित था ताकि समाज का प्रत्येक वर्ग विज्ञान से लाभान्वित हो सके।

विज्ञान कांग्रेस के संदर्भ में यह बात सच है, हालांकि आज भारतीय वैज्ञानिकों के पास शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए अनेक मंच उपलब्ध हैं मगर विज्ञान कांग्रेस ऐसा एक मंच है, जहां हर विषय के विशेषज्ञ शामिल होते हैं। इसके अलावा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सम्बंधी नीति निर्धारण करने वाले लोग भी शामिल होते हैं। भारत के प्रधानमंत्री इसमें स्वयं शामिल होते हैं। भारत की विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी नीति निर्धारण करने के लिए विज्ञान कांग्रेस से उपयुक्त कोई अन्य स्थान नहीं हो सकता है। यहां देश के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका पर व्यापक एवं गहन चर्चा हो सकती है। विज्ञान कांग्रेस में समाज वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, स्कूल-कॉलेज के विज्ञान शिक्षक एवं छात्र तथा आम लोग भी भाग लेते हैं। देश में विज्ञान चेतना या वैज्ञानिक दृष्टिकोण फैलाने में विज्ञान कांग्रेस की विशेष भूमिका है। ***(स्रोत फीचर्स)***